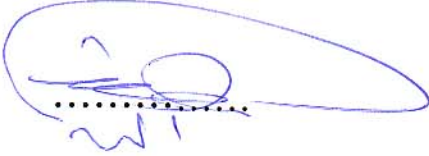


نوقشت هذه الرسالة (أسلوب التهكم في القرآن الكريم ، دراسة تحليلية بيانية) وأجيزت بتاريخ ١٢ / ٥ / ٢٠٠٥م

أعضاء هيئة المناقشة

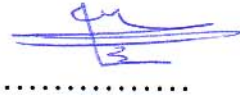
التوقيعات



الدكتور مصطفى إبراهيم المشني ، مشرفاً
أستاذ مشارك - الشريعة



الدكتور أمين المناسية ، عضواً
أستاذ مشارك - الشريعة



الدكتور محمد خازر المجالي ، عضواً
أستاذ مشارك - الشريعة



الدكتور سامي عطا ، عضواً
أستاذ مساعد - الشريعة (جامعة آل البيت)

..... - -
..... - -
..... - -
..... ..
..... ..

- - -

((

):

٤

.() : ()

..
.
.
.
.
..

.

|

::

|

::

.

.

,

.

.

::

::

::

::

::

::

∴

-

-

∴

.()

.

.()

.

.()

.

.()

.

.()

.

()

..

٤

..

..

.

.

! ..

! ..

.

.

.

.

..

.

١

..

..

..

..

..

.

∴

.

.

∧

∴

∴

∴

∴

:

...

.

-

-

-

-

()

-

-

":

()

-

.()"

()

.-

-

()

()

(/)

)

:

()

.(/)

.

(/)

:

(

-()

" "

:

:

()

.()

١٠

:

()

()

:

-

-

:

()

:

()

(/)

:

()

(/)

(/)

:

()

∴

.

.

))

∴

∴

∴

: () () :
 () () :
 " :
 - -
 ()"
 . ()
 . ()
 - - ()
 '))
 : " : () ((...
)) : :
 (/) : : ()
 () :
 . () :
 . () : ()
 . () : - ()

- ()
) - - ()
 : ()
) :
 ! ()
)
 () - - ()
 () :
 (/)
 () : (/) :
 () : : ()

()

:

()

()

()

-

()

()

" :

: ()

.(/)

.(/) :

: ()

(/)

.(/)

()

.()

:

: ()

.()

:

()

)

(/)

:() ((

()"

()

:

:

() ()

()

:

:

()

...

....

()

.

.()

:

()

.()

:

()

.()

:

()

(

)

:

:

()

.

..:

()

:

)

:

:

.(-

(-)

:

:

()

.()

:

()

:

()

) ()

:

(

) ()

:

*

(

:

()

:

()

()

()

*

:

:

:

:

)):

)

((

) :

((...

.() : : ()

.() ()

.() : ()

()(()): ()((...
 :
 .
 () () :
 .()
 .
) () *
 () () *
 .()
 : () *
 . :
 .
 () : (- |) : : ()
 . () : ()
 . : ()
 .() : ()
 .(/)

()

()

() : (/) : : ()
 : () : : ()
 : () : :

•
•

•

•

•

٢٠

•

•

•

•

•

: :
 .()
 : :
 () : ()(()):
 .()
 ()
 () ()
 () ()
 () : ()
 : : ()
 : : ()
 : : ()
 : : ()
 : : ()
 : : (/)
 : : ()
 : : ()
 : : ()
 : : (/)
 : : ()

.

()

. ()

.

-

()

-

.

()

()

" :

()

()"

...

.(/)

: ()

.(/)

: ()

: ()

.(/)

:

:

()

.(/)

()

()

()

. ()

. () ...

":

-

-

()" ...

. :

: ()

. ()

()

: ()

: ()

. ()

()

: ()

. ()

()

:

::

":

."()

:

."

:

:

:

."

."

() : ()
 : ()
 .() - ()
 .() ()

.()

()

()

()

()

()

:

()

()

(/)

:

(/)

(/)

()

" :

...

:

(/)

()

:

:

"

:

:

()

:

:

:

:

()

()

()

()

()

. :

()

()

.

.()

()

.

.

::

.

: () : : ()
 : () : : ()
 .(/) : : .() : ()
 : .(/) : : ()

.

..

.()

:

()

.

:

.()

.()

:

.()

.(/)

()

.(/)

:

()

(/)

:

. ()

:

:

()

.(/)(/)

:

:

()

.()

()

:

() ()

. ()

:

. ()

:

. ()

:

::

:

.

.	()	:	:	()
.	()	:	:	()
.	()	:	:	()
.	(- /)	:	:	()
.	()	:	:	()

.()

()

.()

:

.()

:

:

:

.()

:

. (/) : ()

.(/) : ()

.(/) : ()

.() : ()

.(- /) : ()

: :
 :
 . :
)) : :
 .((:
 : :

.(: :
 : :
 .(:
 : :
 .(:
 : :

.(- /) : : ()
 .() : ()
 .(- /) : ()
 () : ()
 () : ()

∴

.

.

.

.

∴

∴

∴

∴

∴

)) :

- - ()

: ()
.

: - - ()
.

.

: :

.

()

-

-

.() : ()

: ()

.(/)

: ()

.(/)

: (-) : : ()

.()

:
 () () () ()
 -
 -
 () ()
 - ()
 - ()
)) :
 - - : " : () ((
 :
 ()
 : () (()) :
 () (/) ()
 () (/) ()
 () (/) ()
 () (/) ()
 : ()
 . () : .
 . () ()
 . () ()
 . () : ()
 : ()
 : . : (/) :
 . () ()
 . () : ()

()

:

. ()

: () (())

-

-

()

. ()

-

.

-

() (()) :

. ()

:

: () (()) :

:

. ()

. (/) : ()

. () : ()

:

()

: : (/)

. (/)

:

. ()

:

()

. (-) : : ()

. () : ()

. (/) : : ()

. () : ()

. (/) : ()

" : :

.()"

: ()): : - -
()

.
": :

.()"

.()

:

()

-

-

:

:

()

:

.()

:

:

.(/)()

()

.(/)

:

()

.(/)()

:

()

.(/)

:

()

.(/)

:

()

:

()

.(/)

.

.

.

.

.

..

..

..

..

..

.

:

)) :

((

.

-

-

.

.

.

-

-

:

"((...)

):

:

:

((

)

:

:

...

.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()

.()"

. ()

- -

-

:

.

.

-

.(/) :

()

:

:

()

.(/)

- - - - -
 - - - - -
)) :
 ((
 : - - - - -
 : ()
 ((...))
 - - - - -
)): ()
 - : ((... ()
 .() -
 .() : ()
 .() : ()
 .() : ()
 .(/) : ()
 .() : ()
 : : ()
 .(/) : (/)

()

:

()

()

) : -

-

-

-

) :

()

.

- :

.

.

...

()

:

- :

(/)

:

()

()

:

:

()

()

:

()

()

:

()

()

:

:

()

() () :

() : () : () :

() : () : () :

() : () : () :

() : () : () :

() : () : () :

() : () : () :

:

()

()

()

)) :

((()

. ()

.(/) : ()

.(/) : ()

(/) ()

.() : ()

: (/) : (/) : : ()

.(- /) :

-

:

-

...

) :

:

) :

(...)

) :

(

) (

) :

(

) :

(

(

. -:

(

) :

:

(

) (

) :

:

(...

) :

:

(

) :

:

) :

:

(

.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()
.()	:	()

-) : :
 .()((...) : :
 .()(() : :
 .
 -
 ()
 .
 - -

.() : ()
 .() : ()
 .() : ()

)) : () :

.()((

()

:

()((...)) :

.

:

) : ()((...)) : ()

) : ()((...)) : ()((...)) :

.()((

()

(/) : _____ ()

.() : ()

.(/) ()

.() : ()

.(/) : () : :

.() : ()

.() : ()

.() : ()

.() : ()

.() : ()

(()) :

...

() :

((...)) :

()

...

"

...

()"

- -

:"

:

...

:

...

()"

() ((...)) :

) :

-

()

()

- ()

∴

:

()

(-)

:

()

(- /)

(/)

:

()

()

:

()

(/)

:

()

:

:

()

(/)

()

() : ()
 :
 .
 . :
 : () :
 () (()) :
 .
 () :
 .
 . () : ()
 : (/) : ()
 : (- /) : ()
 : () : ()
 () : ()
 () :
 . () : ()
 : () : ()

-

-

()

()

. ()

:

:

∴ ()

.

.	(-)	.	()	:	:	()
.	(-)	.	()	:	:	()
.	()	.	()	:	:	()
.	()	.	()	:	:	()

. :
 .
 " :
 () :
 - -
)) :
 . () : ()
 . ()
 () : ()
 (/) : ()
 (/) : ()
 . (/) : ()
 () : ()
 . () : ()
 (/) : : ()
 . (/)

. (/) : ()
 . (/) : : ()
 . () : ()
 . (/) : ()
 . () : ()
 . () : ()
 (/) : : ()
 . (/)

:

...

.()

-

()(()) :

-

:

()

:

()

.()

.()

:

()

.(

)

::

:

.

.

.

:

:

)

.(

)) : :
 .^()((
 : (()) :
 : : :
 .^()(())
 ()
 .^()
 :
 ()
 :
 .
 .() : ()
 .() : ()
 .(/) : ()
) : ()
 : ()
 : : ()
 .(/)
 (/) : : ()
 (/) : : ()

)) : :

.()((

(()) : :
()

()

":

.()"

)) :

()((

()

.()

.() : ()

: : ()

:

:

(/) :

.(/)

.(/) : ()

.(/) : ()

.() : ()

.(/) : : ()

:

: ()

.()

)) : ((
)) : ((
 .((
 :
 " : :
 ()"
 .()
 !
 ((...)) :
 : :
 .()
 .() : ()
 .() : ()
 .() : ()
 () : ()
 .(/) : (/) : ()
 .() : ()
 (-) : ()

) : :
 .^()((...
 (()) :
 :
 ()
 .
 ()
 () ()
 .
 ...)) : :
 .^()((...
 (()) : :
 .
 .() ()
 : : : ()
 : : : ()
 (/) : :
 .(/) : (/) : ()
 : : : : ()
 (/) : (/)
 .() : ()

()

() (()): - -

)): - - () ((

)) :

() ((

))

" : - - ((

...

:

()"

:

()"

" :

(/) : : ()

() : ()

() : ()

() : ()

(/) : ()

(/) : ()

)): :
 ((
 :
 ()
 :
 .(
 : :
 (()): (()) :
 (()) : (()) :
 :
 - -
 !
 .() : ()
 (/) : : ()
 .() : ()
 .() : ()
 .() : ()
 .() : ()

()^{١١}

()(()) :

()(()) :

-

()

) : :

()((

(()) : :

)

() : : ()

() : ()

() : ()

(/) : ()

(/) : ()

() : ()

()((

" :

() (())

.()"

)) :

.()((...

:

- :

:

()

-

.()

()

()

:

-

-

:

.() :

()

.(/) :

()

.() :

()

:

(/) ()

.()

(/)

:

()

.()

.(/) :

()

:

()

:

()

.

(())

.()

)) :

.()((

:

.() ()

-

-

(/)

: : ()

.() :

)) :

.(/)() ((...

.() :

٨٠

":- -

.()"

.()

)) :

.()((

":- -

:

.()"

)) :

.()((

- -
.

- - :

.(/)	:	(/)	:	()
.(/)	:		:	()
		.()	:	()
		.(/)	:	()
		.()	:	()

() : !

)) : () .()((

- -

: () :

": ()

: () - ()

: ()(()) :

: ()

.()"

.() : ()

.(/) : ()

.() : ()

.(/) : ()

: : () : ()

: : ()

.()

.() : ()

. (/) : : ()

.(/) : ()

.(()) :
 :
 :
 :
 : ()
 () ()
 :
 : ()
 - - ()
 . ()
)) : :
 .()
 (/) : (/) : : ()
 (/) : (/) : : ()
 : (/)
 (/) : (/) : : ()
 .(/) : (/) : : ()
 .(/) : : ()
 .() : ()
 .() : ()

(())

:

()

:

:

()

:

":

.

-

-

.")"

(()) :

!

/)

: (/)

.() : ()

: ()

. (

.(/) : ()

.(/) : ()

.() : ()

:

()

:

)) :

:

.()((

()

()

:

!

()

.()

" :-

-

...

.	:	(/)	:	()		
.	()	:	()			
.	()	:	()			
.	(/)	:	()			
.	()	:	:	()		
.	(/)	:	(/)	:	()	
.	(/)	:	:	(/)	:	()

()"

)) : :

.(')((

()

)) : :

.(')((

)) : (()) : (')((
: (()) : (')((
: (')((

:

.(/) : ()

.() : ()

(/) : : ()

.() : ()

.() : ()

.() : ()

.() : ()

: () :
 : () :
 . () (())

() ()

()

: () :
 : () : ()
 : () : ()
 () : () :

. : (/) : ()
 . : () : ()
 . () : ()
 . (/) : ()
 . : () : ()
 . (/) : ()
 . () : ()
 . : (/) : ()
 . : (/) : ()
 . : () : ()
 : ()
 . (/)

()

()

()

. () (()) : :

. ()

()

() ()

: (/) : ()
.(/) : (/) (/) : ()
. () : ()
.(/) : : ()
.(/) : : ()

: .(')(()) : :
: (()) :

(')!

)) :
.(')((

" : - -

(')(((')'')): :
: : :
() :

(')(()) :

.()	:	()
.(/)	:	(/)
.()	:	()
.(/)	:	(/)
.()	:	()
.(/) :	:	(/)
.()	:	()

)) : :
 .()((
) : " : - - .()((
 : : ((:
 () :
 .()"
 () :
 .()(()) : :
 : .()(()) :
 : .() (()) :
 .() (()) :
)) : :
 .()((...
 .() : ()
 .(/) : ()
 .() : ()
 .(/) : : : ()
 .(/) : ()
 .() : ()
 .(/) : ()
 .() : ()

:

.()

)) : :

.()((

()

()

-

-

-

:

-

.()

" : -

-

.()"

.()

.(/)

:

(/)

:

:

()

.()

:

()

.(/)

:

()

.(/)

:

()

. (/)

()

.(/)

:

()

.(/)

:

()

)

.()"

- -

)) :

((

()

- -

:

:

:

.

.()((

)) :

:

:

()

()

()

()

.

.(/)

:

()

.()

:

:

()

.()

:

()

:

(/)

:

:

()

.(/)

.(/)

:

:

()

()

()

:

)) :

.(')((

:

()

()

":

) :

(

(')"

)) :

.(')((

:

:

.(/)

:

()

.()

:

()

.(/)

:

:

()

.(/)

:

()

.(/)

:

()

.()

:

()

:

:

.()

)) :

:

.()((

-

-

-

-

-

-

.()

.()((

)) :

:

()

:

()

:

-

-

-

-

:

.(/)

:

()

.()

:

()

/)

:

(/)

:

(/))

:

()

.(

.()

:

()

.(/)

:

()

. : ()

:

()

" : - - ()
!

.()"
!
)) :
.()((

()
.()

()

.()

)) : :
.()((...
(()) :

.()

:	(/)	:	(/)	:	:	()
					(/)	
			.(/)	:		()
			.()	:		()
			.(/)	:		()
			.(/)	:		()
			.(/)	:		()
			.()	:		()
			.()	:		()
:	(/)	:	(/)	:		()
					.(/)	

()

()

!

)) :

.(')((

: (()) :

()

.(')((

)) :

:

:

()

:

()

:

: () (/)

: : ()

.(/) :

.(/) : ()

.() : ()

: (/) : (/) : : ()

.(/)

.() : ()

. : (/) : ()

.(/) : ()

" :
 ()"
 ()
 () () : :

- -

: " : - -

()"

(/) : ()
 (/) : ()
 () : ()
 (/) : ()

الخاتمة

:
)

(

:

:

::

::

::

::

:

::

::

::

.

::

التوصيات

=

=

()

:

()

()

Scorn in the Quran Kareem

Analytical / descriptive study

by

Ahmad Diab Ahmad Hussein Ananzeh

Supervisor

Dr. Mustafa Ibrahim AL-Mashni

ABSTRACT

This study discussed a style of speech and addressing styles of the Holy Quran, Which is the scorn style, in regard to language regard to language reasoning : articulation and t terminology evolution and critical and literature utility In addition to reveal the taste of interrupters and some contemporary individuals who desk with his art.

The study has taken into consideration the verses (Ayat) which have been revealed with his style, This has been completed in two facts: First : Cite most of the ayat - that decartelize with this, orientation ; hen determining the reasons, features, aliments and characteristics of this art and to show its ratiocinative impact .

Second ;"I-he revealing of the scorn style which appeared in most of the verses .

The study has concluded that is " the Concept of scorn has a broad reasoning and several goals and a great importance : Calling to faith, literature, retaliation and esthete aspects .